विशेष तिथियां

वास्तव में आदिशक्ति एक ही हैं, उन्ही का आदि रुप **काली** है और उसी का विकसित स्वरूप **षोडशी** है। इसी से षोडशी को रक्तकाली नाम से भी स्मरण किया जाता है। भगवती तारा का रुप काली और षोडशी के मध्य का विकसित स्वरूप है। प्रधानता दो ही रुपों की मानी जाती है और तद्नुसार **कालीकुल एवं श्रीकुल** इन दो विभागों में दशों महाविद्यायें परिगणित होती हैं। कुछ तिथियां अपने आप में महत्त्वपूर्ण होती हैं एवं सिद्धिप्रद मानी गई हैं। ऐसे ही कुछ महत्त्वपूर्ण तिथियों के साथ प्रत्येक महाविद्या के श्रीगणेश एवं नवरात्र की तिथियों को भी यहां स्पष्ट किया जा रहा है । यथा,

चार नवरात्रि - 1. **चैत्रशुक्ल प्रतिपदा से नवमी तिथि तक, चैत्र नवरात्रि**
2. **आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक गुप्त नवरात्रि**
3. **आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक, शारदीय नवरात्रि**
4. **माघ शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक गुप्त नवरात्रि**

दशमहाविद्या के श्रीगणेश एवं महाविद्या की विशिष्ट तिथियां -

क्रम	**महाविद्या**	**गणपति**	**महाविद्या की जयन्ती तिथि**
1.	श्रीदक्षिणकाली	- श्री क्षिप्रप्रसाद गणपति	- भाद्रपद कृष्णपक्ष अष्टमी
2.	श्री तारा	- श्री नीलगणेश	- चैत्र शुक्लपक्ष नवमी
3.	श्री षोडशी	- श्री क्षिप्रगणपति	- माघ शुक्लपक्ष पूर्णिमा
4.	श्री भुवनेश्वरी	- श्री त्रैलोक्यमोहन महागणेश	- भाद्रपद शुक्लपक्ष अष्टमी
5.	श्री छिन्नमस्ता	- श्री एकदन्त गणपति	- बैशाख शुक्लपक्ष चतुर्दशी
6.	श्री त्रिपुरभैरवी	- श्री विकट गणपति	- मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष पूर्णिमा
7.	श्री धूमावती	- श्री धूम्रवर्ण गणपति	- ज्योष्ठ शुक्लपक्ष अष्टमी
8.	श्री बगलामुखी	- श्री हरिद्रा गणपति	- बैशाख शुक्लपक्ष चतुर्थी
9.	श्री मातंगी	- श्री उच्छिष्ट गणपति	- बैशाख शुक्लपक्ष चतुर्दशी
10.	श्री कमला	- श्री गौरीपुत्र गणेश	- कार्तिक कृष्ण अमावस्या

उपासना और साधना में सिद्धि प्राप्त करने के लिए कुछ अन्य उपयोगी सिद्ध तिथियां एवं रात्रियॉ - 1. वीररात्रि-चतुर्दशी को रविवार हो, 2. महारात्रि- आश्विन शुक्लपक्ष अष्टमी, 3. कालरात्रि- कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को अर्धरात्रि में अमावस्या का योग होने पर अथवा नरक चतुर्दशी, 4. मोहरात्रि- भाद्रपद कृष्ण अष्टमी अथवा जन्माष्टमी, 5. क्रोधरात्रि- चैत्र शुक्ल नवमी, 6. घोररात्रि- मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमी, इसे महाकाल वीर जयन्ती भी कहते हैं। 7. अचलारात्रि - फाल्गुन कृष्णपक्षअष्टमी को मंगलवार या शुक्रवार हो, 8. तारारात्रि- ज्येष्ठ शुक्लपक्ष दशमी, 9. शिवरात्रि- फाल्गुन कृष्णपक्ष त्रयोदशी अथवा अहोरात्रि या महाशिवरात्रि, 10. मृतसंजीवनी रात्रि- अमावस्या को शुक्रवार हो और मध्यान्ह में सूर्यग्रहण हो, 11. सिद्धरात्रि- चैत्रमास की अष्टमी को रविवार या संक्रान्ति हो, यह काली एवं तारा के लिए विशेष सिद्धिदायक माना गया है। 12. देवीरात्रि- किसी भी मास के कृष्णपक्ष की अष्टमी को मंगलवार हो, 13. सिद्धिरात्रि- किसी भी माह के कृष्णपक्ष की नवमी को मूलनक्षत्र हो, 14. रिद्धिसिद्धियोग रात्रि- चैत्रमास के तृतीया को रेवती नक्षत्र हो, इत्यादि । अन्य भी कई ऐसे योग होते हैं परन्तु हमने कुछ महत्त्वपूर्ण रात्रियों का ही यहां उल्लेख किया है।